



बी.एड. तृतीय सेमेस्टर CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान में निम्न उपलब्धि स्तर के कारणों का अध्ययन एवं समाधान करना

डॉ . शामशेर सिंह काका

प्रशांति कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज़, उज्जैन म.प्र., ssskaka13@gmail.com

स्नेहलता रावत

इन्दौर महाविद्यालय इन्दौर म.प्र., snehatarawat89@gmail.com

सतवीर सिंह काका

ओरिएण्टल यूनिवर्सिटी, इंदौर म.प्र., sskaka13@gmail.com

तन्विंदर कौर काका

ओरिएण्टल यूनिवर्सिटी, इंदौर म.प्र., tanvindar13@gmail.com

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.16908029>

प्रस्तावना:- यह शोध बी.एड. के क्षेत्र से संदर्भित है | इसका समाधान स्वयं बी.एड. के छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका द्वारा किया जा सकता है | इस शोध में क्रियात्मक अनुसंधान के अध्ययन से भी कम समय लगेगा एवं शोध के पश्चात् बी.एड. छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका के उपलब्धि स्तर में भी वृद्धि होगी | विक्रम विश्वविद्यालय से सम्बन्धता प्राप्त शिक्षा महाविद्यालय में पढ़ाया जाने वाला विषय CC1 क्रियात्मक अनुसंधान, प्रायोगिक विषय है | इसके कुल अंक 100 हैं, जिसमें 75 अंक बाह्य मूल्यांकन और 25 अंक आंतरिक मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या में वर्णित हैं | क्रियात्मक अनुसंधान पाठ्यचर्या में कुल चार ईकाईयाँ हैं | पहली ईकाई अनुसंधान एवं शैक्षिक अनुसंधान, दूसरी ईकाई क्रियात्मक अनुसंधान, तीसरी ईकाई अनुसंधान चरण एवं उपकरण तथा चौथी ईकाई क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन से सम्बंधित है |

इस अनुसंधान विषय के अंतर्गत निम्नलिखित शैक्षणिक गतिविधियाँ संपन्न कराई जाती हैं-

1. अनुसंधान का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र, महत्त्व एवं अनुसंधान शब्दावली का बोध कराना |
2. अनुसंधान का शिक्षा में प्रयुक्ता (शैक्षिक अनुसंधान) का अर्थ, क्षेत्र, परिभाषा, महत्त्व को वर्णित करना | 3. अनुसंधान के प्रकारों आधारभूत / मौलिक अनुसंधान, प्रयुक्त अनुसंधान और क्रियात्मक अनुसंधान से



अवगत कराना |

4. अनुसंधान की ऐतिहासिक, प्रयोगात्मक और सर्वेक्षण अनुसंधान विधियों का विस्तृत वर्णन करना।
5. शिक्षा क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता, अर्थ, परिभाषा उपयोगिता का बोध कराना।
6. क्रियात्मक अनुसंधान का कक्षा-कक्ष में शिक्षकों, प्रशासकों एवं निर्देशन कर्मचारियों के लिए प्रयुक्त स्वरूप के महत्त्व की व्याख्या करना।
7. विद्यालय में विभिन्न क्षेत्रों में क्रियात्मक समस्याओं का उदाहरणों सहित सार्थक वर्णन करना एवं क्रियात्मक अनुसंधान की सीमाओं का स्पष्ट उल्लेख करना।
8. क्रियात्मक अनुसंधान के चरणों का क्रमबद्ध रूप में संख्यात्मक उदाहरण प्रस्तुत करना।
9. अनुसंधान में प्रयुक्त आँकड़ा संकलन उपकरणों उपलब्धि परीक्षण, प्रश्नावली, साक्षात्कार, अनुसूची, जांच सूची, निर्धारण मापनी आदि का वर्णन, प्रयोग, व्याख्या करना।
10. विद्यालय में विद्यार्थियों की अभिक्षमता, अभिवृत्ति, समाजमिति, रूचि, व्यक्तित्व, मूल्य, बुद्धि एवं सृजनात्मकता आदि परीक्षण व परिसूची के प्रयोग, प्रशिक्षण, अनुभवों का बोध कराना।
11. मात्रात्मक एवं गुणात्मक आँकड़ों का अर्थ, विश्लेषण, सह-सम्बन्ध पियर्सन कोटि अंतर विधि एवं वर्णनात्मक, चित्रात्मक आँकड़ों की व्याख्या करना।
12. क्रियात्मक अनुसंधान चरणों का क्रमबद्ध रूप सहित प्रतिवेदन लेखन करना।
13. शोध में सारांश, ग्रन्थसूची एवं परिशिष्ट का महत्त्व, उपयोगिता का वर्णन करना।
14. विद्यालय, दैनिक जीवन, स्थानीय रूचि के विषयों पर क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग करना और समस्याओं का निराकरण / निदान करने से अवगत कराना।



इस शोध-पत्र में उपरोक्त वर्णित गतिविधियाँ इस सेमेस्टर में सम्पन्न करायी गयी हैं |

बी.एड. तृतीय सेमेस्टर के छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका के CC1 क्रियात्मक अनुसंधान के प्रायोगिक विषय में प्राप्त उपलब्धि के निम्न स्तर के कारणों को जानने के लिए निम्नलिखित कारणों से समस्या का चयन करने का अनुभव किया गया-

1. छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका के स्नातक और स्नाकोत्तर विषय के पाठ्यक्रम से अनभिज्ञता |
2. क्रियात्मक अनुसंधान का अस्पष्ट, विस्तृत एवं अव्यवहारिक पाठ्यक्रम |
3. छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका की कम उपस्थिति व अनुभवों में कमी |
4. बी.एड. के नवीन पाठ्यक्रम में इस विषय का अनिवार्य व महत्वपूर्ण स्थान न होना |
5. अनुसंधान क्षेत्रों से अपरिचित होना |
6. छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका का शोध / अनुसंधान को महत्वपूर्ण न मानकर विषय में रुचि न लेना |
7. छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका का अनुसंधान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का न होना |

शोध प्रश्न / उद्देश्य :- प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नलिखित शोध प्रश्न / उद्देश्य का निर्धारण किया गया –

1. बी.एड. तृतीय सेमेस्टर के CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान पाठ्यक्रम का अध्ययन करना |
2. बी.एड. तृतीय सेमेस्टर के CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान में छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका की उपलब्धि के निम्न स्तर के कारणों की जानकारी प्राप्त करना |
3. CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान के स्तर में वृद्धि हेतु मार्गदर्शन प्रदान करना |
4. मार्गदर्शन की प्रतिपुष्टि छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका से प्राप्त करना |
5. बी.एड. तृतीय सेमेस्टर के CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से अध्ययन में आने वाली समस्याओं व उनके कारणों का अध्ययन करना |

परिकल्पना :- प्रस्तुत शोध हेतु निम्नांकित परिकल्पना का निर्माण किया गया –



1. बी.एड. तृतीय सेमेस्टर के CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान में छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका की उपलब्धि के निम्न स्तर के विभिन्न कारणों का अध्ययन करना |
2. बी.एड. तृतीय सेमेस्टर छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका के CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान के अध्ययन में आने वाली समस्याओं का भिन्न-भिन्न प्रकार से अध्ययन करना |
3. बी.एड. तृतीय सेमेस्टर छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका को मार्गदर्शन द्वारा उपलब्धि के स्तर में सामान रूप से वृद्धि प्राप्ति का अध्ययन करना |

शोध प्रविधि :- प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया |

उपकरण :- प्रश्नावली, उपलब्धि परिक्षण, प्रतिपुष्टि पत्र |

कार्य विधि :- प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा निम्न कार्य विधि का अनुसरण किया गया –

1. प्रशांति कालेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, उज्जैन म.प्र. के बी.एड. के छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका का न्यादर्श के रूप में उपलब्धता के आधार पर उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में चयन किया गया |
2. बी.एड. के छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका के लिय शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान में उपलब्धि परीक्षण पत्र को प्रशासित कर उपलब्धि ज्ञात की गई |
3. बी.एड. के छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका जिनका निम्न उपलब्धि स्तर प्राप्तकर्ता को शोधार्थी द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया गया
4. तत्पश्चात बी.एड. के छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका का पुनः उपलब्धि परीक्षण द्वारा उपलब्धि ज्ञात की गई |
5. पूर्व व पश्च उपलब्धि परीक्षण स्तर ज्ञात किया गया |
6. उपलब्धि स्तर में वृद्धि पूर्व व पश्च उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों की तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् मार्गदर्शन जो प्रदान किया गया था उसके लिए प्रतिपुष्टि प्राप्त की गई |
7. उपरोक्त शोध के दौरान प्राप्त परिणामो पर चर्चा कर निष्कर्ष प्राप्त किया गया |



प्रदत्तों का विश्लेषण :- शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान में उपलब्धि परीक्षण पत्र द्वारा प्राप्त पूर्व व पश्च उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों की तुलनात्मक अध्ययन निम्नांकित है-

परीक्षण प्राप्त छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका	पूर्व परीक्षण	प्रतिशत %	पश्च परीक्षण	प्रतिशत %	उपलब्धि स्तर में वृद्धि
1	10	20	30	60	40
2	15	30	25	50	20
3	14	28	30	60	32
4	20	40	40	80	40
5	16	32	35	70	38
6	22	44	40	80	40
7	28	56	34	68	14
8	12	24	28	56	32
9	26	52	40	80	28
10	30	60	35	70	10
11	14	28	30	60	32
12	18	36	25	50	14
13	20	40	40	80	40
14	22	44	44	88	44
15	18	36	36	72	36
16	26	52	40	80	28
17	12	24	28	56	32
18	24	48	32	64	16
19	30	60	40	80	20
20	22	44	40	80	40
21	20	40	40	80	40
22	30	60	35	70	10
23	25	50	30	60	10
24	18	36	25	50	14



25	10	20	30	60	40
26	20	40	40	80	40
27	18	36	36	72	36
28	26	52	40	80	28
29	14	28	30	60	32
30	12	24	28	56	32
31	20	40	40	80	40
32	30	60	40	80	20
33	30	60	40	80	20
34	20	40	40	80	40
35	30	60	35	70	10
36	25	50	30	60	10
37	18	36	25	50	14
38	15	30	25	50	20
39	26	52	40	80	28
40	22	44	40	80	40

उपरोक्त प्रदत्तों से विश्लेषण से स्पष्ट होता है, कि CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान के बी.एड. के छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका को उचित मार्गदर्शन से पढ़ाने पर उपलब्धि स्तर में कम से कम दस प्रतिशत से बढ़कर चवालीस प्रतिशत तक वृद्धि दर्ज की गई।

बी.एड. के छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका को अति लघुत्तरीय स्तरीय प्रश्नों को हल सहित व्याख्या कर समझाने पर CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान का समुचित ज्ञान की प्राप्ति हुई जिसके फलस्वरूप उपलब्धि में वृद्धि पाई गई।

परिणाम :- प्रस्तुत शोध हेतु निम्नांकित परिणाम प्राप्त किये गए –

1. बी.एड. तृतीय सेमेस्टर के CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान में छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका की उपलब्धि के निम्न स्तर के विभिन्न कारण पाए गए अतएव प्रथम परिकल्पना अस्वीकृत नहीं होती है।



2. बी.एड. तृतीय सेमेस्टर छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका के CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान के अध्ययन में आने वाली समस्याएँ भिन्न-भिन्न प्रकार की पायी गई इसलिए द्वितीय परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जाती है, क्योंकि समस्याएँ भिन्न - भिन्न पाई गई |

3. बी.एड. तृतीय सेमेस्टर छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका को मार्गदर्शन द्वारा उपलब्धि के स्तर में सामान रूप से वृद्धि प्राप्ति हुई अतएव तृतीय परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जाती है |

निष्कर्ष :-बी.एड. तृतीय सेमेस्टर के CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान के छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका के प्राप्त परिणाम एवं मार्गदर्शन, प्रतिपुष्टि द्वारा यह निष्कर्ष प्रदान किया जाता है, कि उन्हें विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है | जिसके फलस्वरूप उनकी विषयगत उपलब्धि कम हो जाती है इनके कारण भी छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका द्वारा भिन्न-भिन्न कारण प्रदर्शित किये जाते हैं | यदि उनको उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाए तो निश्चित तौर पर उनकी उपलब्धि के स्तर में वृद्धि होती है |

शैक्षिक निहितार्थ :-शैक्षणिक प्रक्रिया के दौरान उचित मार्गदर्शन के द्वारा किसी भी विषय की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल, सहज, रुचिकर एवं प्रभावी बनाया जा सकता है तथा प्रतिपुष्टि मार्गदर्शन को भी अधोचित बनाया जा सकता है | छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका के उपलब्धि स्तर को समस्या व उनके कारणों का अध्ययन कर उन्हें दूर कर उचित मार्गदर्शन देकर उपलब्धि स्तर में वृद्धि प्रदान की जा सकती है |

सुझाव :-बी.एड. तृतीय सेमेस्टर के छात्राध्यापक / छात्रध्यापिका के CC1 विषय क्रियात्मक अनुसंधान से संदर्भित प्रश्नबैंक व स्वाधिगम सामग्री द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है |

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. शर्मा, आर. ए. (2012). शिक्षा अनुसंधान, आर.ल लाल बुक डिपो, मेरठ |
2. गुप्ता, एस. पी. (2006). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन , इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन |
3. पाल, एच. आर. (2004). शैक्षिक शोध भोपाल मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी |
4. सिंह, रामपाल एवं शर्मा औ.पी.(2005). शैक्षिक अनुसंधान एवं संख्यिकीय , विनोद पुस्तक मंदिर आगरा |
5. राय, पारसनाथ (2006). अनुसंधान परिचय , लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा |



6. सरिन एवं सरिन (2004). शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ विनोद पुस्तक मंदिर आगरा |
7. Aggarwal, J.C. (1983). Educational Research an Introduction. New Delhi Arya Book Depot.
8. Efrom, S.E. &Ravid, R. (2020). Action Research in Education: A Practical Guide the Guilford Press.
9. Pandey, Alok& Jain, S. (2021). Action Research, Thakur Publication Bhopal.
10. Koul, L. (1984). Methodology of Education Research, New Delhi Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
11. Corey, S.M. (1953).Action Research to Improve School Practices, New Work Bureau of Publication Columbia University.
12. NCERT(1995).Research in Classroom, New Delhi,Volume I to iv.
13. McLean J.E. (1995). Improving Education through Action Research, California, Corwin Press, INC.